IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों में 'बर्न–आउट' का अध्ययन

कृष्णा कुमारी नावरिया
एम.एड. (छात्रा) शिक्षाविभाग
बीयानी बी. एड. महाविद्यालय, जयपुर

सारषं

मानव जीवन में शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि जन्म से बालक का पशुवत व्यवहार करता है उसके व्यवहार में सौन्दर्य लाने का कार्य शिक्षा ही करती है।

किसी भी राष्ट्र की उन्नति उस राष्ट्र की शिक्षा पद्धति पर निर्भर करती है और अध्यापक शिक्षा पद्धति का केन्द्र बिन्दु होता है। अध्यापक की प्रत्येक क्रिया और व्यवहार का प्रभाव उसके विद्यार्थियों, विद्यालय एवं समाज पर पड़ता है। इस दृष्टि से अध्यापक राष्ट्र का निर्माता होता है। प्रो. हुमायु कबीर ने कहा है कि ''अच्छे अध्यापको के बिना शिक्षा की सर्वोत्तम पद्धति भी सफल नही हो सकती तथा अच्छे अध्यापक से शिक्षा पद्धति के दोषों को भी दूर किया जा सकता है।''

की–वर्ड : शिक्षक बर्नआउटए शिक्षक श्रेणीए समावेशी शिक्षा ए आत्म प्रभावकारिताए शिक्षण सहायक

शिक्षक को समाज की रीढ़ भी माना गया है अगर किसी व्यक्ति की रीढ़ की हड्डी कमजोर हो अथवा उसमें किसी तरह का कोई विकार हो तो पूरा शरीर सुचारू रूप से कार्य नहीं कर पाता है ठीक उसी तरह समाज के नैतिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक विकास में शिक्षक एक रीढ़ के समान है। शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षक व उसके द्वारा किये गये कार्यो पर निर्भर करती है। शिक्षा की गुणवत्ता व शिक्षक की गुणवत्ता में सीधा सम्बन्ध है। शिक्षक शिक्षा में नवाचार तथा शिक्षण की नई तकनीकों का प्रयोग कर शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाता है।

अध्यापक विद्यार्थियों की आकांक्षा के अनुरूप उनका सर्वांगीण विकास कर राष्ट्र एवं समाज के लिये उपयोगी नागरिक बनाने की दृष्टि से अपनी विद्वता, सृजनात्मकता व अन्य गुणों का प्रयोग करता है। वह उचित शिक्षण विधियों का प्रयोग करते हुए विषय सामग्री को छात्रों के समक्ष रोचक व प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। वह छात्रों के निकट रहकर उन्हें समझता है और आवश्यकतानुसार उचित निर्देशन प्रदान करता है वह अभिभावकों से मधुर सम्बन्ध बनाकर उन्हें विद्यालय के कार्यक्रमों में सहभागी बनाता है तथा समुदाय को विद्यालय के निकट लाने का प्रयास करता है। वह प्रधानाध्यापक, अध्यापकों तथा विद्यालय के अन्य कर्मचारियों से मधुर सम्बन्ध बनाकर विद्यालय के सामाजिक वातावरण निर्मित करने का प्रयास करता है। इस प्रकार विद्यालय के सम्पूर्ण वातावरण व शिक्षा के हर स्तर पर अध्यापक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

प्राचीन काल में शिक्षण को एक सेवा के रूप में देखा जाता था। ज्ञान दान को एक परम पवित्र और महत्वपूर्ण सामाजिक हित के कार्य के रूप में स्वीकृति और मान्यता दी जाती थी और शिक्षक व शिष्य सम्बन्ध परस्पर आत्मीय सम्बन्ध होते थे शिक्षक का स्थान भगवान से भी ऊँचा माना जाता था। वर्तमान युग में शिक्षण कार्य ने व्यवसाय का रूप ले लिया है। अध्यापक वेतन लेकर ज्ञान देने लगा है तथा शिक्षण व्यवसाय को शिक्षण के प्रति रूचि नही बल्की रोजगार की समस्या के निदान के रूप में अपनाया जाने लगा है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

प्रस्तावित अध्ययन की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से हैं –

अधिकांश अध्यापक शिक्षण व्यवसाय में ईमानदारी से छात्रों के भविष्य निर्माण में मदद के लिये प्रवेश करते है। उनकी ऊर्जा स्तर उच्च होता है, उनके इरादें मजबूत व हौसले बहुत बुलन्द होते है। उनके नैतिक मूल्य अच्छे व आदर्श उच्च कोटि के होते है। वे विद्यार्थियों को अच्छा नागरिक बनाकर सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण करना चाहते है। अध्यापक सोचते है कि यदि वो अपने कार्य को जिम्मेदारीपूर्वक निभाएगें तो निःसन्देह उनके सामने सकारात्मक परिणाम आएंगे।

जब अध्यापक ऐसे विचारों के साथ विद्यालय में शिक्षण कार्य के लिये प्रवेश करते है तो उन्हें वहाँ अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जैसे विद्यालय प्रशासन व प्रबन्ध का सुव्यवस्थित ढंग से कार्य न करना, विद्यालय कर्मचारियों व विद्यार्थियों का आशानुकूल व्यवहार न होना, अत्यधिक कार्य भार होना विद्यालय में आवश्यक संसाधनों की कमी होना, प्रधानाचार्य का पक्षपातपूर्ण व्यवहार होना आदि।

शिक्षकों पर बालकों पूर्ण जिम्मेदारी होती है। तथा कक्षा शुरू होने साथ उन्हें विभिन्न शैक्षिक समस्याओं को पहिचानना पड़ता है और उनका निवारण करना पड़ता है। शिक्षकों पर समाज के बहुत से प्रतिबन्ध लगे होते है जिनका निवारण उन्हें करना पडता है। शिक्षक को अपने कार्य का परिणाम प्राप्त करने में काफी समय लगता है। साथ ही सरकार द्वारा भी शिक्षकों से शिक्षण कार्य के अलावा अन्य कार्य जैसे– पल्स पोलियों, साक्षरता–मिशन जनसंख्या व परिवार कल्याण कार्यक्रम, स्वास्थ्य जागृति, मिड–डे–मिल आदि का अतिरिक्त बोझ डाल दिया जाता है। विद्यालय प्रशासन के इस तरह के अनैतिक व्यवहार व अरूचिकर तथा थकान देने वाले अतिरिक्त कार्यो के बोझ से तथा उत्साह में कमी, कुंठा, विद्यार्थियों व कर्मचारियों से भावनात्मक अलगाव, अत्यधिक स्वहित प्रशासन का अनैतिक अध्यापक तनाव व कुंठा का अनुभव करता है जब अध्यापक की आवश्यकताओं व आकांक्षाओं की पूर्ति नही होती है तो वह शारीरिक मनोवैज्ञानिक व भावनात्मक दृष्टि से असंतुष्ट रहने लगता है जब अध्यापक की यह असंतुष्टि या नकारात्मक अभिवृत्ति लम्बे समय तक बनी रहती है तो उसकी कार्य करने की क्षमता धीरे–धीरे समाप्त होने लगती है और वह 'बर्न–आउट' की ओर अग्रसर होता है।

अध्यापको में दीर्घ स्थायी नकारात्मक सोच भावनात्मक थकान उत्पन्न करती है और उनकी यह नकारात्मक अभिवृत्ति उन्हें अपने विद्यार्थियों व व्यवसाय से दूर ले जाती है जो अध्यापक व छात्र की सकारात्मक उपलब्धि की भावना को नुकसान पहुँचाती है।

'बर्न–आउट' क्या है ?

'बर्न–आउट' का तात्पर्य है– ''कार्य करने की ऊर्जा का समाप्त हो जाना।''

'बर्न–आउट' 1970 के मध्य संयुक्त राज्य अमेरिका में अर्विभाव हुआ था और आश्चर्यजनक तेजी के साथ एक अवधारणा बन गया। जब तनाव, दुश्चिंता हताशा में सिन्ड्रोम स्तर तक वृद्धि हो जाती है तो वह बर्न–आउट है।

'बर्न–आउट' अध्यापक अपने चारों ओर उपस्थित प्रत्येक वस्तु के दोष ढूंढते है तथा हमेशा तनावमें दूसरों के साथ कार्य करते है।

'बर्न–आउट' को निम्न पक्षो द्वारा समझाया जा सकता है–

→ कार्य क्षमता में कमी ।

→ लक्ष्यों को सीमित कर लेना।

→ अत्यधिक स्वहित ।

→ विद्यार्थियों से भावनात्मक अलगाव ।

→ कर्मचारियों के साथ भावनात्मक अलगाव।

→ आदर्शवाद की कमी।

→ स्वयं की जिम्मेदारियों में कमी।

कार्य क्षमता में कमी से व्यक्ति तनाव के कारण अपने वास्तविक लक्ष्य से भटक जाता है। जिससे अध्यापक अपने विद्यार्थियों से सामान्य व्यवहार नहीं कर पाता है और उनके मध्य स्थापित सम्बन्ध में दूरी बढ़ जाती है।

आर्थिक समस्याएँ, भौतिक संसाधनों की उपलब्धता में कमी, पक्षपातपूर्ण व्यवहार, अत्यधिक कार्य भार, उत्साह की कमी आदि अनेक व्यक्तिगत समस्याओं के कारण अध्यापक अपने उन लक्ष्यों को सीमित (कम) लेता है जो उसने पूर्व में निर्धारित किये थे।

जब अध्यापक स्वयं में तथा अपने परिवार में ज्यादा रूचि लेता है तथा उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति को ही अधिक महत्व देता है तो कार्य क्षमता कक्षा कक्ष में पूर्ण रूप से प्रकट नही हो पाती है।

विद्यार्थियों से किसी प्रकार का संवेगात्मक लगाव न होने के कारण अध्यापके विद्यार्थियों के प्रति अपनत्व नहीं दिखाता है और अध्यापक विद्यार्थी के मध्य स्थापित सम्बन्धों में दूरी आ जाती है।

उपसंहार

प्रस्तुत शोध पत्र में अध्यापकों में 'बर्न आउट' का अध्ययन किया गया है। बर्न आउट का तात्पर्य है – ''कार्य करने की ऊर्जा का समाप्त हो जाना।'' अत्यधिक कार्य भार, विद्यालय प्रशासन का असहयोगात्मक व्यवहार कुंठा आदि कारक एक शिक्ष को अनुत्साहित व अकुशल बना देती है जो अपने विद्यार्थियों के साज पूर्ण क्षमता के साथ कार्य करने में असमर्थ होता है बर्न आउट अध्यापक कहलता है।

वर्तमान समय में 'बर्न आउट' के बारे में सभी को जानकारी होनी चाहिये जिससे अध्यापकों में बर्न आउट के जिम्मेदार कारणों को कम कर सके या पूर्ण समाप्त कर कसे ताकि अध्यापक अपने व्यवसाय व अपने काय्र के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपना सके और अपने देश की उन्नति में सार्थक योगदान दे सके और भावी देश में जिम्मेदार नागरिकों को तैयार कर सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] भार्गव, महेश : आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन

[2] वर्मा, प्रीति व श्रीवास्तव डी.एस. : मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी

[3] गैरिट, ई. हेनरी : शिक्षा और मनोविाान में सांख्यिकीय में प्रयोग

[4] शर्मा, आर.ए. : अध्याय शिक्षा

[5] मया, शंकर सिंह : अध्यापक शिक्षा की चुनौतिया

[6] सिंह, रेनु : शिक्षक सक्षमता

[7] पाठक, पी.डी. : शिक्षा मनोविज्ञान, पृ.सं.518–577

[8] वार्ष्णेय, आर.पी. : सांख्यिकी के मूल तत्व

[9] चित्रा, मालवीय : अध्यापकों के लिये अध्यापन एक चुनौती के रूप मे